CHAPTER 44

SANSKRIT

Doctoral Theses

390. अग्रवाल (शुचि)
आचार्य विट्ठलनाथ विरचित श्रृंगाररसमण्डनम् का साहित्यिक एवम् दार्शनिक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. मदन मोहन अग्रवाल
Th14799

सारांश

श्रृंगाररसमण्डन विट्ठल द्वारा रचित मुक्तक पदों तथा गीतों का एक संकलन है। मुक्तक काव्य शैली की दृष्टि से महाकाव्य सदृश ही होता है, उसमें एक घटना, एक रस और एक भाव मुख्य होता है । आछ सर्ग से छोटा तथा गीति-काव्य रूप में प्रस्तुत किया जाने वाला होता है । प्रस्तुत 'श्रृंगाररसमण्डन' गीतिकाव्य एक मुख्य भाव-कान्ता-भक्तिभाव हो लिखा गया है जिसमें जीव स्वयं को पत्नी के तथा भगवान् को पति के रूप में देखता है । इस कान्ताभक्ति परक काव्य के प्रतिपाद्य प्रभु तथा नायक आनन्दकन्द श्रीकृष्ण हैं । भगवान् निष्काम हैं । उनके द्वारा गोपियों की काम भावना का गमन अवश्य हुआ है किन्तु वह काम लौकिक तथा इन्द्रियजन्य नहीं है । अन्यथा उसमें सांसारिक भावना उत्पन्न होती पर उसमें वैसा नहीं हुआ। काम और प्रेम स्वरूपतः और कार्यतः भिन्न हैं । गोपियों में काम की नहीं प्रेम की प्रधानता है । कृष्ण के सुख में सुखी होना एवं आनन्दित होना उनका लक्ष्य हे । उनके समस्त कार्य कृष्ण सुख हेंतु किए जाते हैं, जिसमें उनको आपार आनन्द की प्राप्ति होती है । यह गोपियों की पुष्टि-भक्ति है, जिसमें उन्हें किसी साधन की आवश्यकता नहीं है । मात्र प्रेम ही उनका साध्य है ।

विषय सूची

1. श्रृंगाररसमण्डन और उसके लेखक का परिचय 2. श्रृंगाररसमण्डन का साहित्यिक अध्ययन 3. श्रृंगाररसमण्डन का दार्शनिक अध्ययन 4. उपसंहार। ग्रंथ सूची।

391. आर्य (कर्मवीर)

महाभाष्य के परिप्रेक्ष्य में तद्धित प्रत्ययों की समीक्षा ।

निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स

Th 14776

सारांश

प्रत्ययों की विधि के परिप्रेक्ष्य में यह अवधेय है कि तद्धित-प्रयत्न न केवल सर्वाधिक संख्या वाले हैं अपितु सर्वाधिक महत्वपूर्ण भी हैं । तद्धितों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताने के पीछे कारण यह है कि इनके अध्ययन से तत्कालीन इतिहास, परम्परा एवं सम्यता की विस्तृत जानकारी मिलती है । इन प्रत्यययों के माध्यम से तात्कालिक समाज में व्यवहृत रूढ़ एवं योगरूढ़ शब्दों से परिचित हो पाते है । तद्धित-प्रत्यय कृदन्तों की अपेक्षा से जटिल भी हैं क्योंकि, कहीं ये सुबन्त से होते हैं और कहीं प्रातिपादिक से ।

विषय सूची

1. व्याकरण की अवधारणा और उसके अध्ययन की परम्परा 2. पत्ययदिविकारान्तार्थ साधारण प्रत्यय 3. परिभाषायें 4. पारिवारिक संरचना । उपसंहार और निष्कर्ष। ग्रंथ सूची ।

392. DESAI (Subhadra)

Valmikiya Ramayana Men Samgita : Eka Vislesanatmaka Adhyayana.

Supervisor : Dr. Sushma Kulshreshtha

Th 14754

Abstract

Demonstrates the poet Valmiki's intense engagement with Music. If these were only a reflection of the contemporary society's concerns or the poet's personal prediction, may be a matter of conjecture. However, it is indisputable that Ramayana's interface with music reveals music was a primary cultural instrument of that era. Indian Classical Music Tradition is indeed a continuum, it is an unbroken chain from this earliest classic of Sanskrit literature. Sanskrit is repository of this heritage, as well as a vehicle to transport the full range of its import, to us in present day India in particular, and the world, generally.

Contents

1. Introduction. 2. Vocal music and musical (technical) tenets with reference to Ramayana. 3. Musical instruments with reference to Ramayana. 4. The cultural backdrop of Music in the Ramayana- era. 5. Music in nature. Conclusion, Bibliography and Appendixes.

393. शर्मा (सरिता)

केरलोदय महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 14783

सारांश

केरलोदय महाकाव्य में साहित्याचार्यों के द्वारा प्रतिपादित महाकाव्य के लक्षण सम्यग्रूपेण घटित होते है । महाकाव्य की कथावस्तु ऐतिहासिक, अंगी-रस वीर, अभिधा-शक्ति की प्रधानता, चित्रालंकारों का अभाव, अर्थालंकारों का सहज प्रयोग, उपमाअलंकार तथा अर्थान्तरन्यास अलंकार का बहुल प्रयोग, अनुष्टुप्, वंशस्थ, रथोद्धता, स्त्रग्धरा, शालिनी, प्रमिताक्षरा आदि सत्तरह छन्दों का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों का सटीक एवं प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण किया गया हैं । केरलोदय महाकाव्य पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है ।

विषय सूची

1. महाकाव्य के रूप में केरलोदय । 2. कवि का व्यक्तित्व तथा कृतित्व । 3. केरलोदय महाकाव्य की कथावस्तु, वर्ण्य-विषय तथा सामान्य परिचय। 4. केरलोदय महाकाव्य में ध्वनि तथा रस । 5. केरलोदय महाकाव्य में अलंकार । 6. केरलोदय महाकाव्य में अन्य साहित्यशास्त्रीय तत्त्व । 7. केरलोदय महाकाव्य में वर्णित प्राचीन हिन्दू राजाओं का काल, बाह्य शक्तियाँ एवं उनका प्रभाव । 8. अट्ठारहवीं शताब्दी एवं उसके बाद का केरल । उपसंहार । संदर्भ ग्रन्थ सूची । परिशिष्ट ।

394. शुक्ल (अभिनव)

श्रीधरभास्कर वर्णेकर कृत श्रीशिवराज्योदयम् महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. चन्द्रभूषण झा

Th14753

सारांश

डा. श्रीधर भास्कर वर्णेकर रचित श्रीशिवराज्योदयम् महाकाव्य के साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के उपरान्त कुछ निष्कर्षात्मक विचारबिन्दु उभर कर आते हैं - (1) नीवन रचनाओं के सन्दर्भ में साहित्यशास्त्रीय मान्यताओं का पुनरीक्षण करने कि लए आचार्यों को सामने आना चाहिए । (2) यह कार्य एक व्यक्ति के वश का नहीं है। इसके लिए साहित्य-चिन्तकों के एक बहुसदस्यीय दल का निर्माण करना चाहिए जो दस-पाँच वर्षों में प्राचीन साहित्यशास्त्र में हानोपादान कर उसे अधुनातन काव्यों के समीक्षण-मूल्यांकन के योग्य बना सकें । (3) साहित्कारों और साहित्यचिन्तकों की प्रत्येक दशक में दीर्घकालीन कार्यशालाएँ आयोजित हों जो लक्ष्य ओर लक्षणों की निकटता को बनाने में सहायक हों । (4) 'पण्डितराजान्तं साहित्यशास्त्रम्' के प्रवाद से बचकर विगत तीन शताब्दियों विशेषतः बीसवीं ओर इक्कीसवीं शताब्दी के साहित्य के अनिवार्य अध्ययन के लिए कार्य योजनाएँ तैयार की जायें जिनमें प्रत्येक विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर तथा एम. फिल्. स्तर पर प्रत्येक छात्र विगत 50 वर्षों में रचित अथवा विगत 10 वर्षों में प्रकाशित किसी महाकाव्य अथवा साहित्यिक रचना पर पांच-दस पृष्ठों में सामान्य परिचयात्मक निबन्ध लिखे जिस पर उसे अंक दिये जायें । (5) इन सभी सामाग्री को कम्यूटरीकृत करके सभी विश्वविद्यालयों/इण्टरनेट/संस्थाओं को सुलभ कराया जायें जिससे कि संस्कृत के प्राचीन शास्त्रीय भाषात्व के साथ उसकी प्रतयग्रता ओर आधुनिक भाषात्व का भी प्रत्यायन हो सके । संस्कृत एक ऐसी कड़ी है जो देश ओर विश्व को सुदूर अतीत से प्रत्यग्र वर्तमान तक को जोड़ने की क्षमता रखती है । आवश्यकता इस बात की है कि श्रीशिवराज्योदयम् जैसी शतशः-सहस्रशः रचनाओं से परिचित होकर उनके अनुवाद-समीक्षण आदि से उनका परिचय समकालीन साहित्य-जगत् को दिया जाये और स्वयं संस्कृत के प्राचीन और आधुनिकतम स्वरूप से परिचित हुआ जाये ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. साहित्यशास्त्र में निर्धारित महाकाव्य का स्वरूप, विकास एवं आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों का रूपवैशिष्ट्य 3. श्रीशिवराज्योदयम् की वस्तु योजना । 4. श्रीशिवराज्योदयम के नायक तथा अन्य पात्र 5. श्रीशिवराज्योदयम की रस योजना एवं वर्णन विच्दित्ति 6. श्रीशिवराज्योदयम में गुण, रीति अलंकार एवं छन्दोयोजना तथा संगीतात्मकता 7. श्रीशिवराज्योदयम में समकालीन युगबोध 8. श्रीशिवराज्योदयम का वैचारिक पक्ष 9. उपसंहार 10. परिशिष्ट।

395. वशिष्ठ (कमलेश)

नैषधीयचरितम् पर मल्लिनाथ की जीवातु टीका का समालोचनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. दीप्ति शर्मा त्रिपाठी

Th14752

सारांश

मल्लिनाथ की नैषधीयचरितम् पर जीवातु टीका गागर में सागर के समान है । इन्होंने सब कुछ अपनी टीका में समेटा हुआ है । मल्लिनाथ ने अपनी टीका में अर्थ-वैशिष्टय, व्याकरणिक नियमों को उद्घाटित करने के साथ-साथ प्रत्यय आदि का विवेचन, अन्य शास्त्रों के प्रमाण, काव्यशास्त्रीय विवेचन आदि का वर्णन किया है ।

विषय सूची

1. व्याकरणिक दृष्टि-नाम शब्द-अव्युत्पन्न, व्युत्पन्न 2. व्याकरणिक दृष्टि-धातु (क्रिया शब्द)-अव्युत्पन्न, व्युत्पन्न 3. दार्शनिक दृष्टि 4. काव्यशास्त्रीय दृष्टि 5. कोश-ज्ञान (अर्थस्पष्टीकरण हेंतु) 6. मल्लिनाथ की भाषा-शैली । निष्कर्ष एवं उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

M.Phil Dissertations

396. अंजू

काव्यप्रकाश में वर्णित रूप्यक द्वारा लिखित संकेत टीका का समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. गिरीश पंत

397. आशा कुमारी

योगदर्शन में दर्शनोपनिषद् का स्थान ।

निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला पुन्जानी

398. ज्योत्सना

षष्ठी विभक्ति का सर्वकारकत्व के रूप में मूल्यांकन ।

निर्देशक : डॉ. सत्य पाल सिंह

399. KRISHNA
Vasyasikanyayamala Ke Prathama Adhyaya ki Samiksa.
Supervisor : Dr. Shakuntala Punjani

400. कन्नौजिया (नेहा)
रघुवंश और कुमार सम्भव में वर्णित सामुद्रिक शास्त्रीय सामग्री ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्रा

401. महेश
मेघमा लाव कादम्बिनी के कृषि सम्बन्धी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्रा एवं डॉ. रामदेव झा

402. पनवार (संध्या)
अष्टाावक्रगीता का दार्शनिक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला पुंजानी

403. प्रामीता
आचार्य कृष्णमित्रकृत सांख्य परिभाषा का अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. एम. एम. अग्रवाल

404. रावल (तनूजा)
वरदराज का न्यादर्शन का योग (तार्किकरक्षा के सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : प्रो. एम. एम. अग्रवाल

405. सरवेन्द्र कुमार
वर्तमान नागरिक जीवन में वास्तुशास्त्र ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्रा

406. शर्मा (दिप्ति)
भारतीय ज्योषि शास्त्र में त्रेराशिक गणित का उपयोग ।
निर्देशक : डॉ. पुनीता शर्मा

407. SUDEV
Kshemendra Virchit - Samkhyatatwa Vivechan ka Samikshatamak Adhyayan.
Supervisor : Prof. M. M. Aggarwal

408. सुमित्रा
शाबरभाष्य के अनुसार धर्मप्रामाण्यपरीक्षा ।
निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

409. त्रिपाठी (लक्ष्मी कान्त)
प. मूलशंकर मणिकलाल याज्ञिक के नाटक छत्रपतिसाम्राज्य का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. शारदा शर्मा

410. उपाघ्याय (अक्षय मनि)
कृषि पराशर व घाघ के कृषि सिन्द्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्रा एवं डॉ. रामदेव झा

411. विनोद कुमार
सिद्धान्तकौमुदी में प्रत्याख्यात कशिकावृत्ति के संदर्भ में ।
निर्देशिका : प्रो. दिप्ति त्रिपाठी

412. YADAV (Raj Mangal)
Anarghraghav ki Rasa Yojana.
Supervisor : Dr. Sharda Sharma